

चिनुआ अचेबे

आकाश

में

मौज-मस्ती

आकाश में मौज-मस्ती

चिनुआ अचेबे

हिन्दी रूपान्तर : लता/सत्तू प्रसाद
आवरण एवं रेखांकन : रामबाबू



अनुराग ट्रस्ट

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : रु. 20.00

प्रथम संस्करण : जनवरी 2008

पुनर्मुद्रण : जनवरी 2010

प्रकाशक

अनुराग ट्रस्ट

डी-68, निरालानगर

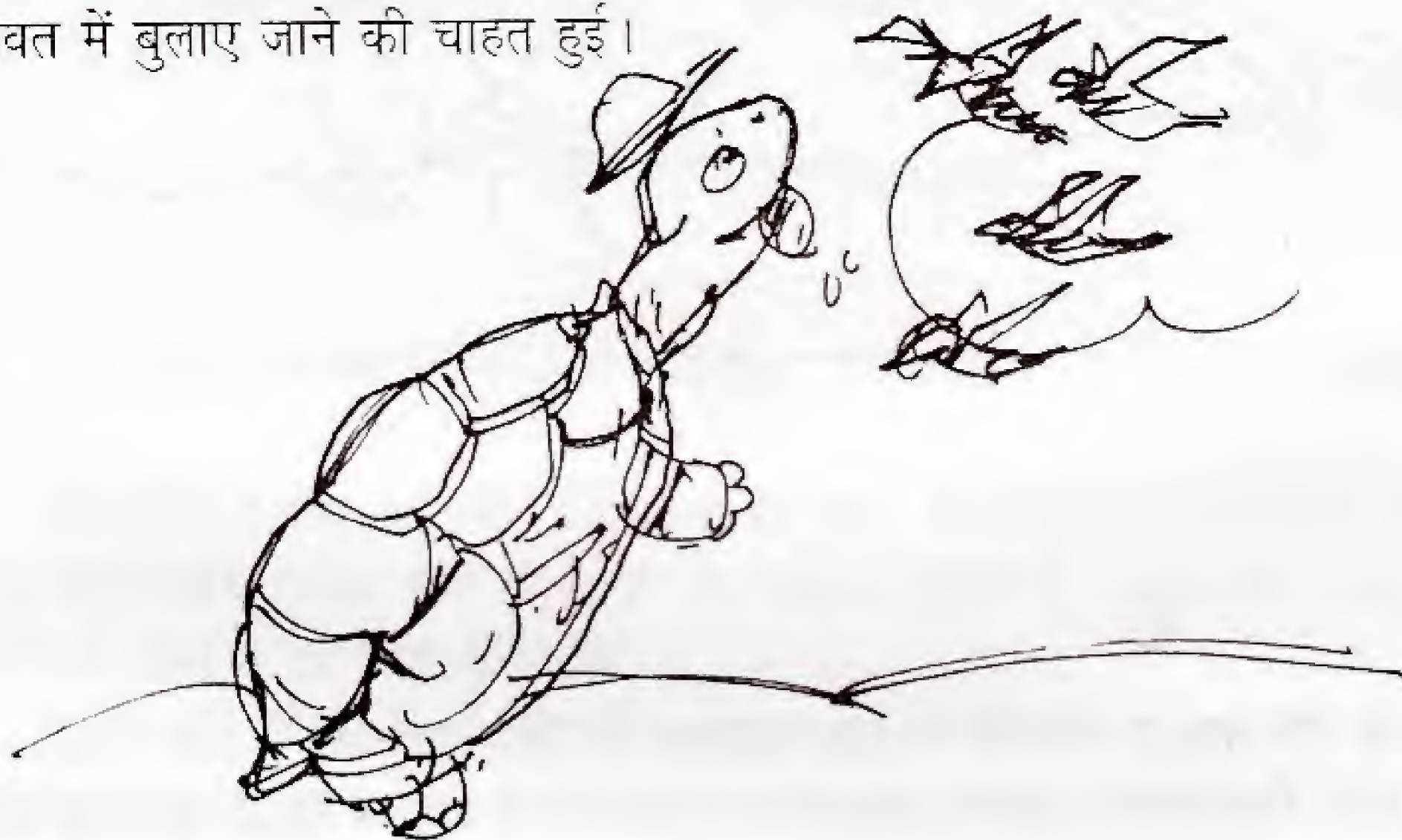
लखनऊ-226020

लेजर टाइप सेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फाउण्डेशन
मुद्रक : क्रिएटिव प्रिण्टर्स, 628/एस-28, शक्तिनगर, लखनऊ

आकाश में मौज मस्ती का समय

चिनुआ अचेबे

एक बार की बात है, आकाश के निवासियों ने चिड़ियों को एक बड़ी दावत के लिए आमंत्रित किया। जैसे-जैसे चिड़ियों ने दावत को सफल बनाने के लिए आकाश में चल रही तैयारियों के बारे में कहानियाँ सुनीं उनकी खुशी और उत्तेजना का ठिकाना नहीं रहा। कई तरह के पकवान बनाए जा रहे थे। इसके बदले में चिड़ियाँ जितना ज्यादा-से-ज्यादा हो सका अपने आपको खूबसूरत और आकर्षक बनाने में लग गईं। कछुए को भी दावत का पता चला। और स्वादिष्ट और सुखद भोजनों की सूची सुनकर लालच होने लगी। उसे भी उस दावत में बुलाए जाने की चाहत हुई।



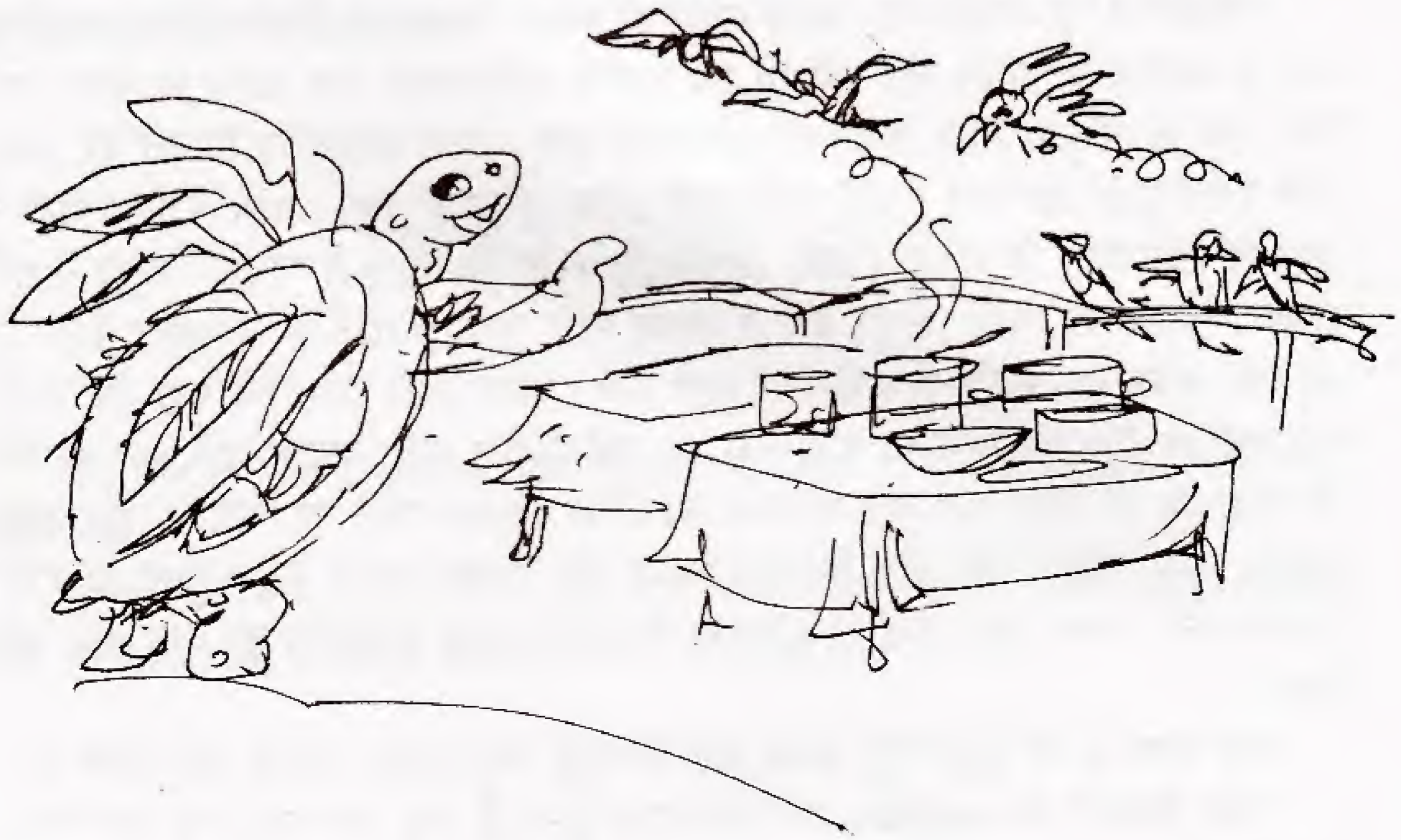
इसलिए वह चिड़ियों के पास गया और दावत के बारे में जानकारी लेने लगा। जब उसे उस दावत के बारे में सारी चीजें पता चल गईं तो उसने भी दावत में उनके साथ शरीक होने की इच्छा जाहिर की। उसने चिड़ियों से कहा कि दावत में उनकी तरफ से कोई बोलने वाला होना चाहिए; कोई ऐसा जो उनका नेता हो। कुछ देर सोच विचार करने के बाद सारी चिड़ियाँ अपने साथ कछुए को ले जाने को राजी हो गईं। तब सवाल ये उठा कि कछुआ उड़ेगा कैसे; उसके पास कोई पंख तो है नहीं। इसलिए सारी चिड़ियाओं ने अपना एक-एक पंख कछुए को उधार दे दिया। कछुए ने उनको मिला कर दो पंख तैयार कर लिये। वो चिड़ियों से कुछ खास और अलग दिखने लगा, क्योंकि उसके पंखों में कई अलग-अलग रंग और अलग-अलग आकार के पंख थे।



दावत के दिन कछुआ चिड़ियों के साथ आकाश की ओर उड़ चला।

आकाश के निवासियों ने अपने मेहमानों का गर्मजोशी से स्वागत किया और उन्हें घर जैसा आराम देने की पूरी तैयारी की। धूर्त कछुए ने चिड़ियों के कान में धीरे से फुसफुसा

कर कहा कि इस तरह के अवसर पर नए नाम रखने का रिवाज होता है। उसने अपना नाम रखा “आप सबों के लिए”। उसने सारी चिड़ियों की ओर से एक भाषण दिया और अपने मेजबान (आकाश के निवासियों) को इतनी अच्छी दावत देने के लिए शुक्रिया अदा की।



और अन्त में उसने मेजबानों से पूछा कि “आप लोगों ने ये तैयारियाँ किसके लिए की हैं?”

उन लोगों ने कहा, ये सभी “आप सबों के लिए” है। कछुए ने तब चिड़ियों को टोककर कहा, यह दावत “आप सबों के लिए” है, इसका मतलब है, उसके लिए। कछुए के इस बर्ताव से चिड़ियों को चिढ़ होने लगी।

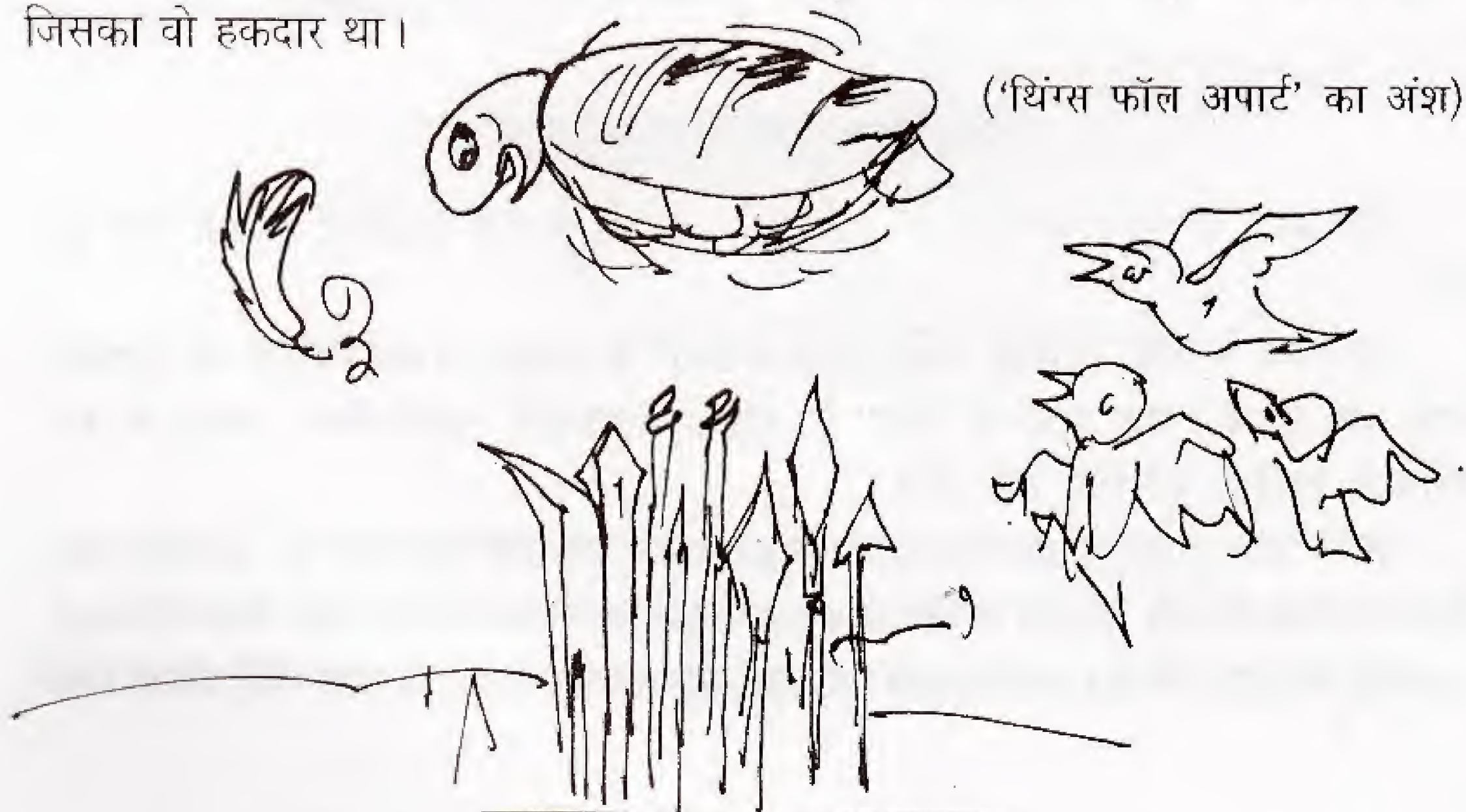
दूसरी ओर मेजबानों को लगा कि कछुआ उनके मेहमानों का राजा है। इसलिए जब भोजन परोसा जा रहा था तब उन्होंने कछुए को पहले आमंत्रित किया। इस मौके का कछुए ने भरपूर फायदा उठाया। सबसे अच्छे पकवानों को गबागब खा गया और चिड़ियों के लिए

केवल हड्डियाँ और कुछ बचा-खुचा खाना छोड़ दिया। उसका पेट अब शराब और पकवानों से भर गया। चिड़ियों का भूख से बुरा हाल हो रहा था। उन्हें कछुए पर बहुत गुस्सा आ रहा था। यहाँ तक कि उनमें से कुछ वहाँ से बिना खाए-पीए आ गई।

चिड़ियों ने इस नमकहराम, स्वार्थी कछुए को सबक सिखाने का निश्चय किया। इसलिए जब वे आकाश से वापस लौट रहीं थीं तब उन्होंने अपने-अपने पंख वापस ले लिए। अब बिना पंख का कछुआ सीधा जमीन की ओर गिरने लगा। उसने चिड़ियों से मिन्नतें की, उनके आगे गिड़गिड़ाया कि कोई उसकी पत्नी तक उसका संदेश ले जाए। सभी में सिर्फ तोते ने कहा कि उसे कछुए से शिकायत नहीं, इसलिए वो कछुए का संदेश ले जाएगा। कछुए ने तोते से कहा कि उसकी पत्नी (कछुए की) से जाकर सारी मुलायम चीजें घर के बाहर फैला देने को कहे, ताकि वह आराम से जमीन पर उतर जाये। तोता उड़ता हुआ नीचे गया और कछुए की पत्नी से ठीक इसका उल्टा कहा—घर के आगे कुदाल, छुरा, बन्दूक यहाँ तक की तोप भी फैला देने को कहा। इस तरह जब वह अपमानित कछुआ जमीन पर गिरा तो सीधे जाकर कुदाल, छुरा, बन्दूक और तोप से जा टकराया और उसका कवच टुकड़े-टुकड़े हो गया। उसकी पत्नी डाक्टर बुला लाई और डाक्टर ने उसके कवच के टुकड़ों को एक साथ जोड़ दिया।

इस वजह से ही कछुए की कवच कई चिप्पियों को जोड़कर बनायी गई लगती है।

सारी चिड़ियाँ दिल खोलकर हँसीं और एक दूसरे से कहा कि कछुए को वही मिला, जिसका वो हकदार था।



(‘थिंग्स फॉल अपार्ट’ का अंश)

एस्तोनिया की लोककथा

मच्छर और घोड़ा

एक दिन एक घोड़ा मैदान में घास चर रहा था। एक मच्छर उड़ता-उड़ता उसके पास पहुँच गया।

“भिन-भिन-भिन...ओय घोड़े, मैं तुम्हें दिखाई नहीं दे रहा क्या?” मच्छर बोला। क्योंकि ऐसा लगा कि घोड़े ने उसकी ओर ध्यान ही नहीं दिया।



“हाँ, अब मुझे दिख रहे हो,” घोड़े ने जवाब दिया।

मच्छर ने घोड़े को एक सिरे से दूसरे सिरे तक देखा। उसने उड़-उड़कर उसकी पूँछ, उसकी पीठ, उसकी टाँगें, उसकी गर्दन और उसके कानों को एक-एक करके देखा। उसने देखा और सिर हिलाया।



“तुम तो बहुत बड़े हो, दोस्त!” उसने कहा।

“हाँ, शायद तुम मुझे छोटा तो नहीं ही कह सकते,” घोड़े ने हामी भरी।

“मैं तो तुमसे काफ़ी छोटा हूँ!”

“हाँ, छोटे तो हो!”

“और तुम खासे ताक़तवर भी होगे?”

“काफ़ी ताक़तवर।”

“मेरे ख़्याल से कोई मक्खी तुमसे नहीं जीत पायेगी,” मच्छर ने पूछा।

“बिल्कुल नहीं!”

“घुड़मक्खी भी नहीं?”

“नहीं, घड़मक्खी भी नहीं जीत सकती।”

“बड़ी मक्खी भी नहीं?”

“नहीं, बड़ी मक्खी भी नहीं।”

मच्छर खुश हो गया।

उसने सोचा “घोड़ा ताक़तवर है लेकिन मैं तो उससे भी ताक़तवर हूँ।” उसने गर्व से सीना फुलाते हुए कहा : “ओए घोड़े, तुम बड़े और ताक़तवर होगे, लेकिन हम मच्छर और भी ताक़तवर हैं। हम तुमको ऐसे डंक मारेंगे कि तुम टें बोल जाओगे। हम चुटकी बजाते तुमको हरा देंगे!”

“नहीं, तुम नहीं जीत पाओगे!” घोड़े ने कहा।

“हाँ, हम जीतेंगे!”

“नहीं!”

“हाँ!”

वे एक घण्टे तक बहस करते रहे। फिर एक और घण्टे तक बहस में उलझे रहे। कोई दूसरे की बात मानने को तैयार नहीं था।

आखिरकार घोड़े ने कहा, “बहस करने से कोई फायदा नहीं। चलो हम दो-दो हाथ करके देख लें कि कौन जीतता है!”

मच्छर ने ताल ठोंकते हुए कहा, “चलो, आ जाओ मैदान में। अभी हम तुम्हें मज़ा चखाते हैं!”

वह घोड़े की पीठ पर से उठा और अपनी पतली-तीखी आवाज़ में अपने साथियों को आवाज़ लगायी : “जल्दी यहाँ आ जाओ सबके सब!”

सैकड़ों मच्छरों के झुण्ड भिन-भिन करते हुए वहाँ पहुँच गये। एक झुण्ड झाड़ियों से उठा; एक झुण्ड बर्च के पेड़ से उड़कर आया, दलदल से, पोखर के सड़ते हुए पानी से, नदी के ऊपर से—हर जगह से उड़कर मच्छरों के झुण्ड सीधे घोड़े के पास आये, चारों तरफ़ से उसे घेर लिया और उसके शरीर से चिपक गये।

घोड़े ने कहा, “अच्छा, तो तुम सब पहुँच गये?”

“हाँ!” पहला मच्छर अकड़कर चिल्लाया। वह कोई मामूली मच्छर नहीं था, मच्छरों का गुण्डा था।

“और सबको बैठने की जगह मिल गयी?”

“हाँ!”

“ठीक है, फिर कसकर पकड़ लो!” घोड़े ने कहा।

वह पीठ के बल लेट गया, खुर हवा में उठा लिये और इधर-उधर लोट लगाने लगा। जरा-सी देर में उसने सारे मच्छरों को मसलकर रख दिया। विशाल मच्छर सेना का सिर्फ एक छुटकू सिपाही बचा रह गया, हालाँकि उसके पंख भी खुरच गये थे। उसके अलावा बस वह गुण्डा मच्छर बच गया क्योंकि खतरा होते ही वह फुर हो गया था। गुण्डे हमेशा ऐसा ही करते हैं। वे लड़ाई शुरू करते हैं लेकिन दूसरे लोगों को लड़ता छोड़कर खुद फूट लेते हैं।

छुटकू सिपाही उड़कर गुण्डा मच्छर के पास गया और उसको सलाम ठोंका, जैसे वह कोई जनरल हो।

“घोड़ा मर चुका है, हमने उसे खत्म कर दिया!” वह बोला। “अगर हमारे पास दो-चार लोग और होते, तो हम उसकी खाल उतार लाते।”

“शाबास!” गुण्डा मच्छर ने कहा। वह जंगल की ओर उड़ गया ताकि कीड़ों और चींटों को भी इस घटना की जानकारी दे दी जाये। ये कोई मज़ाक थोड़े ही था! मच्छरों ने एक घोड़े को मिट्टी में मिला दिया था—इसका मतलब था कि अब वे धरती के सबसे ताकतवर प्राणी थे।



रबर मैल

(अफ्रीका कहानी)



एक मकड़ा था, जो बहुत ही आलसी था। रोज दोपहर 12 बजे सोकर उठता, फिर नाश्ता करता और अपनी पत्नी से कहता, “मैं खेत जा रहा हूँ।”

लेकिन वह खेत नहीं जाता था। उसके पास कोई खेत ही नहीं था। वह जंगल जाता और पूरे दिन एक बड़े पेड़ के नीचे बैठा रहता।

कभी-कभी उसकी पत्नी उससे कहती :

“खेत में जब कभी मेरी मदद की ज़रूरत हो तो बताना।”

वह ज्यादा कुछ नहीं कहती, क्योंकि वह उसे नाराज़ नहीं करना चाहती थी।



मकड़ा जवाब देता : “अरे, अभी तो बहुत समय है। तुम चिन्ता मत करो, जब मुझे तुम्हारी ज़रूरत होगी, मैं तुमसे कह दूँगा।”

अक्सर लोग उससे पूछते : “तुम अपने खेत में काम कब शुरू करोगे?” और वह जवाब देता, “अभी बहुत समय है।” फिर एक दिन उसने अपनी पत्नी से कहा : “कल मैं खेत में मूँगफली के कुछ पौधे लगाना चाहता हूँ। तुम बाज़ार जाओ और एक बैग मूँगफली ले आओ। कल मेरे पास वह ज़रूर होना चाहिए।”

उसकी पत्नी यह सुनकर बहुत खुश हुई और मूँगफली खरीदने के लिये बाज़ार की ओर दौड़ी। अगले दिन मकड़ा मूँगफली लेकर जंगल गया और जितना चाहा, जी भर खाया

बड़े पेड़ के नीचे आराम से सो गया। शाम को घर आया और अपनी पत्नी से कहने लगा :

“ओह, मैं कितना भूखा और थका हुआ हूँ। मैं पूरे दिन खेत में काम करता रहा हूँ। क्या नाश्ता तैयार है? हम पुरुषों की ज़िन्दगी बहुत कठिन है। हम सुबह से लेकर रात तक काम करते हैं और तुम औरतें, तुम्हें केवल नाश्ता और खाना बनाना होता है।”

हर दिन मकड़ा बाहर जाता लेकिन खेत में काम करने नहीं बल्कि जंगल में मूँगफली खाता और आराम करता।

समय बीतता गया, और लोग अपने घर खेत से मूँगफली लाने लगे, लेकिन मकड़ा कुछ नहीं लाता था। फिर उसकी पत्नी ने कहा :

“तुम मूँगफली घर कब लाओगे? क्या मैं तुम्हारी मदद करूँ?”



“नहीं, नहीं, मुझे तुम्हारी मदद की ज़रूरत नहीं है,” मकड़ा जवाब देता। “मैं कुछ ही दिन में मूँगफली घर लाऊँगा।”

लेकिन वह मूँगफली घर कैसे लाता? अब तो उसके पास मूँगफली भी नहीं थे! यहाँ तक कि खेत भी नहीं थे!

“मुझे मूँगफली कहाँ से मिल सकता है?” वह खुद से कहता। “आह, समझ गया। मैं थोड़ा मूँगफली चुरा लूँगा,” उसने सोचा।



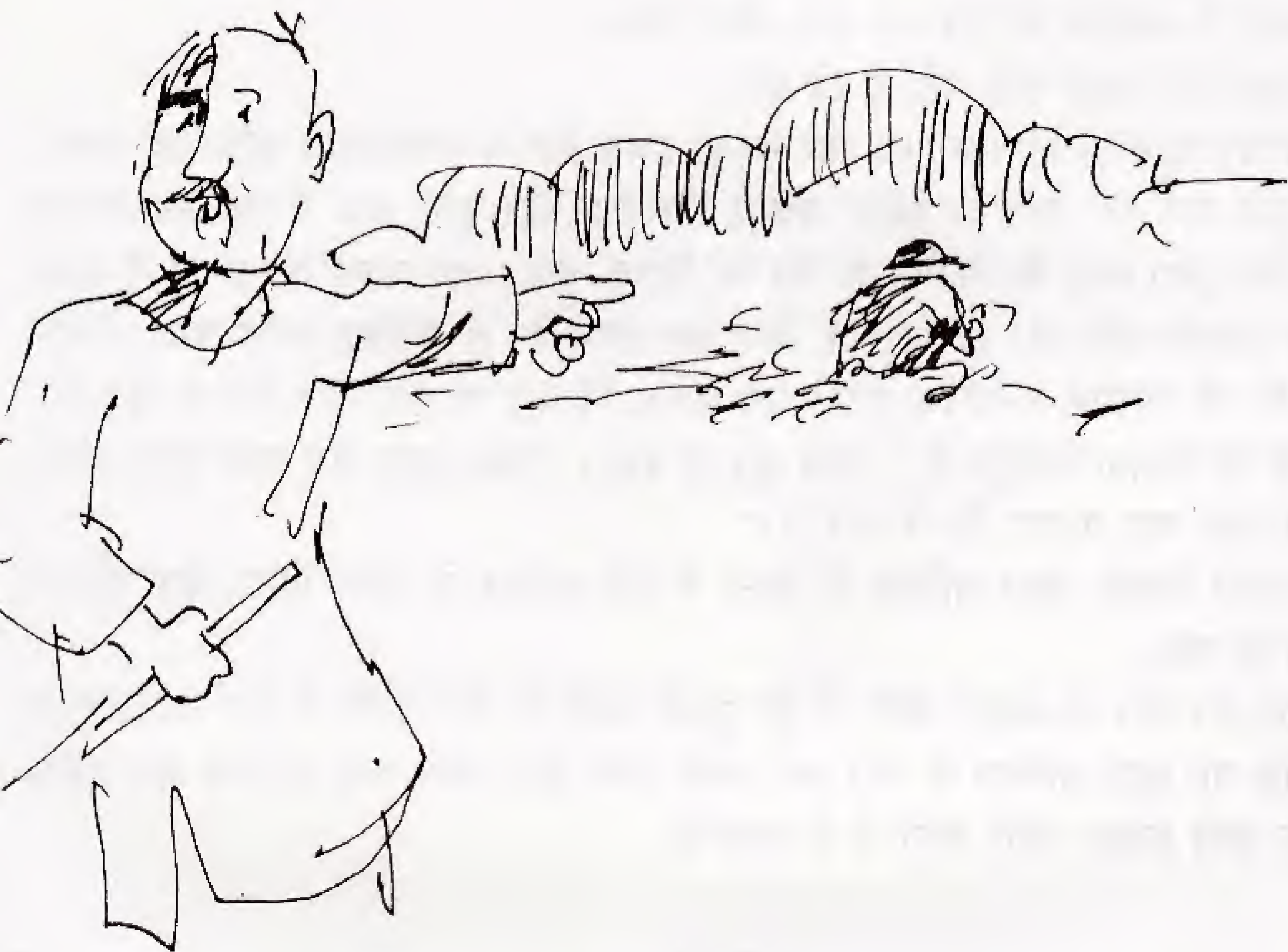
उस रात वह घर के बाहर गया और मुखिया के खेत में पहुँचा। यह बहुत बड़ा खेत था, और वहाँ मूँगफली के खेत में बहुत सारे मूँगफली थे। फिर उसने अपने बैग में मूँगफली भरे, जंगल में एक पेड़ के नीचे उसे छुपा दिया और वापस घर लौट आया। अगली सुबह उसने अपनी पत्नी से कहा :

“आज मैं खेत से मूँगफली लाऊँगा। तुम बढ़िया नाश्ता बनाओ। मैं बहुत भूखा और थका हुआ हूँ।”

“ज़रूर मेरे प्यारे,” पत्नी ने कहा।

मकड़ा जंगल चला गया। पेड़ के नीचे मूँगफली वाला बैग रखा था। मकड़े ने कुछ मूँगफली खाये और सो गया। शाम को वह पत्नी के पास बैग ले गया। वह खुश थी! उसने बैग खोला, एक मूँगफली लिया, उसे खाया, फिर एक और लिया और फिर एक और...। वे बहुत ही अच्छे थे।

अगली रात मकड़ा फिर मुखिया के खेत गया और फिर एक बैग मूँगफली चुरा लिया। जब अगली शाम हुई, वह फिर पत्नी के पास उसे लाया। यही प्रक्रिया वह बार-बार दोहराता रहा। लेकिन एक रात मुखिया के नौकर ने मूँगफली चुराते हुए चोर को देख लिया।



“मैं चोर को ज़रूर पकड़ूँगा, लेकिन ऐसा मैं कैसे कर सकता हूँ?” नौकर ने सोचा। फिर उसे एक विचार आया। उसने दो बड़े बर्तन लिए और गढ़ा पेर्चा (लनजजं चमतबीं) के

कुछ पेड़ लेने जंगल चला गया। उसने भूरा रबर बनाया जिसके अन्दर गट्टा पेर्चा को छिपा दिया; और फिर उससे रबर का आदमी बन गया। मूँगफली के खेत में उसने चिपकाने वाले रबरमैन को रख दिया।

“अब मैं जान सकूँगा कि चोर कौन है,” उसने खुद से कहा।

जब रात हुई और सभी लोग सो रहे थे, मकड़ा मुखिया के खेत में पहुँचा। वह उस जगह गया जहाँ मूँगफली थे और अचानक उसे वहाँ एक आदमी दिखा।

“ओह,” उसने उस आदमी से कहा। “तुम यहाँ क्या कर रहे हो?”

उधर से कोई जवाब नहीं आया।

“तुम कौन हो?” मकड़े ने फिर कहा। “रात में तुम यहाँ क्या कर रहे हो?”

रबरमैन कुछ नहीं बोला।

मकड़े ने रबरमैन के सिर पर मारा और चीखा :

“तुम मेरा जवाब क्यों नहीं दे रहे हो?”

रबरमैन बहुत ही चिपचिपा था और मकड़ा उसके सिर से अपना हाथ खींच नहीं पाया।

“मुझे जाने दो! जाने दो मुझे!” मकड़ा चिल्लाया और दूसरे हाथ से रबरमैन पर वार किया और दूसरा हाथ भी रबरमैन के सिर पर चिपक गया। अब मकड़े को समझ में आया कि यह आदमी नहीं था। दूर जाने के लिए वह अपने पैर से कोशिश करने लगा, लेकिन उसका पैर भी रबरमैन से चिपक गया। अब मकड़ा बिल्कुल भी हिल-डुल नहीं पा रहा था।

“मैं भी कितना बेवकूफ हूँ,” उसने खुद से कहा। “सुबह-सुबह जब सभी लोग आएँगे तो उन्हें पता चल जाएगा कि मैं चोर हूँ।”

बेचारा मकड़ा, सुबह मुखिया के नौकर ने उसे रबरमैन से अलग किया और मुखिया के पास ले गया...

और उस दिन से मकड़ा अँधेरे में मुँह छुपाये रहता है और किसी से कुछ नहीं बोलता है, क्योंकि वह बहुत शर्मिन्दा था और अब उसके बच्चे और उसके बच्चे के बच्चे और उसके बच्चे के बच्चे हमेशा अँधेरे कोने में ही रहते हैं।



अनुराग ट्रस्ट

लखनऊ